International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 04, April- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन''

पर्यवेक्षक
डॉ0 अबधेश सिंह
डीन एवं विभागाध्यक्ष
जे0 एस0 विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

शोध छात्रा
बविता प्रजापति
रिसर्च पेपर
जे0 एस0 विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

प्रस्तावना

किशोरावस्था जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था है। इसे जीवन का बसंत कहा गया है। जीवन में जो कुछ भी मधुरतम है, रोमांचकारी है वह किशोरावस्था में ही होता है। किशोरावस्था को व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक, संघर्ष, तनाव एवं झंझावत की अवस्था कहा गया है। इसमें ज्ञानार्जित करने और उसका प्रयोग करने का सामर्थ्य शिखर पर होता है। किशोरावस्था एक जटिल अवस्था है उसी प्रकार किशोरों की शिक्षा भी जटिल समस्या है, किशोरों को दिशा बोध देना राष्ट्र निर्माण के लिए वरदान है।

इस विषय का अध्ययन करने के पीछे मुख्य कारण यह है कि जब छात्र किशोरावस्था में कदम रखता है, तो उसके साथ कुछ समस्यायें भी आती है और इस समय परिवार, विद्यालय, मित्र सभी की भूमिकाओं के आधार पर इनका व्यक्तित्व विकास संवेगों की परिपक्वता एवं पारिवारिक वातावरण की अनुकूलता के आधार पर हम एक स्वस्थ किशोर का निर्माण कर सकते हैं। इस शोध द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि पारिवारिक वातावरण एवं संवेगों की परिपक्वता के आधार पर इनके व्यक्तित्व का कैसा विकास होता है? क्योंकि अच्छा वातावरण अच्छा व्यक्तित्व, अच्छी तरह संवेगों का परिमार्जन उत्तम परिपक्वता इन्ही सबसे मिलकर एक सफल किषोर का निर्माण होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में आकर्षक व्यक्तित्व भावनात्मक विशिष्टता आदि चिंतन का विषय है कि किस तरह परिवार का वातावरण अनुकूल करके संवेगो में परिपक्वता लाकर, स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके। वर्तमान में हम 21वीं सदी में पदार्पण कर चुके हैं, जहॉ पर विश्वव्यापीकरण, मीडिया का प्रचार–प्रसार, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, इंटरनेट जैसे विभिन्न आयामों के बीच एक व्यक्ति को अपना जीवन यापन करना है। अतः व्यक्तित्व का निर्माण नवीन परिवेश में कैसे हो? संवेगों में परिपक्वता कहॉ से लाई जाये? क्योंकि रेजन परिशोधन करने का समय अभिभावकों के पास नहीं है। पारिवारिक वातावरण दूषित होता जा रहा है, परिवार संयुक्त से एकल हो गये है। इन सभी कारकों के अध्ययन की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 04, April- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आवश्यकता है। परिवारों में बच्चों हेतु समय, उन्हें समाज में समायोजित करना, उन्हें बाल्यावस्था से संवेगों हेतु परिपक्व करके एक स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण कैसे सम्भव हो सकता है।

भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में टीवी, समाचार पत्रों एवं समाज में हो रहे नित नये बदलावों में शोधार्थिनी द्वारा देखा जा रहा है कि किशोर बालकों में बात–बात पर क्रोधित हो जाना, अपराध करना, किसी का सम्मान न करना, समाज में सुसमायोजित प्रवृत्ति के साथ विकसित होना, परिवारों का टूटना, तलाक, अभिभावकों का प्रतिदिन झगड़ना, बच्चों को अधिक समय न देना आदि कारणों से किशोर बालकों का व्यक्तित्व विकास उचित प्रकार से नहीं हो पा रहा है, सभी व्यक्ति आधुनिकता की दौड़ में दौड़ रहे हैं, जहॉ पीछे मूल्य, अपनापन, प्रेम, स्नेह आदि छूटते चले जा रहे हैं, और विकृत व्यक्तित्व तैयार हो रहे हैं। इस परिवेश के आधार पर समाज को बेहद नुकसान पहुॅच रहा है अतः सूक्ष्म एवं विस्तृत स्तर पर इस समस्या का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में पाये जाने वाले अन्तरों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 04, April- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श

फिरोजाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी उपरोक्त अध्ययन की जनसंख्या हैं। उपरोक्त विद्यालयों में से 500 छात्र–छात्राएं अध्ययन में शामिल किये गये हैं जो उपरोक्त अध्ययन का न्यादर्श हैं।

उपकरण

शोधार्थी द्वारा माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मापन हेतु **बहुमुखी व्यक्तित्व परिसूची कु0 मंजू अग्रवाल, शोधकर्त्री आगरा कालेज, आगरा** तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मापने हेतु **कु0 रोमापाल रिसर्च स्कालर (मनोवैज्ञानिक) आगरा कालेज**, का प्रयोग किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियॉ

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं विवेचन के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमानों, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं ''टी'' विश्लेषण

क्र0 सं0	समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि SEd	मुक्तांश df	''टी'' t	सार्थक स्तर
1	छात्र	250	118.42	15.13	1.90	498	2.51	0.05 सार्थक
2	छात्राएं	250	123.22	22.31				

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि प्राप्त ''टी'' 2.51 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम टी मान 1.97 से अधिक है। अतः स्पष्टतः दोनों मध्यमानों के बीच अवलोकित अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना असत्य है एवं अस्वीकृत की जाती है। अर्थात हम कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान क्रमशः 118.42 एवं 123.22 का अंतर है देखने पर ज्ञात होता है कि छात्रों की तुलना में छात्रओं में सांवेगिक परिपक्वता अधिक है। इस कथन की पुष्टि ए0 आर्य 1984 का शोध अध्ययन करता है। ए0 आर्य ने अपने अध्ययन में उच्च परिवार के बच्चों में संवेगात्मक परिपक्वता एवं मूल्यों को व्यक्तित्व विकास में उपयोगी माना।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 04, April- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तालिका 2

माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व मध्यमानों, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं ''टी'' परीक्षण

क्र0 सं0	समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि SEd	मुक्तांष df	''टी'' T	सार्थक स्तर
1	छात्र	250	245.98	17.2	1.80	498	0.46	0.05 असार्थक
2	छात्राएं	250	246.82	19.0				

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि प्राप्त ''टी'' 0.46 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम टी मान 1.97 से कम है। अतः स्पष्टतः दोनों मध्यमानों के बीच अवलोकित अंतर 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत की जाती है। अतः कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के मध्यमानों में क्रमशः 246.82 एवं 245.88 का अंतर है, देखने पर ज्ञात होात है कि छात्राओं की तुलना में छात्रों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया गया है।

तालिका क्रमांक 3

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर F मान का विश्लेषण

	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	वर्गों का मध्यमान	प्रसरण अनुपात	सार्थकता स्तर
समूहों के मध्य प्रसरण	41.28	2	20.64	0.78	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
समूहों के अंदर प्रसरण	6413.70	397	16.153		
कुल	6454.98	399			

तालिका क्रमांक 3 यह दर्शाती है कि प्राप्त F का मान 0.78 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम F मान 3.02 से कम है। अतः स्पष्टतः दोनों मध्यमानों के बीच अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत की जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 04, April- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कर्ष

व्यक्तित्व विकास में माता–पिता, परिवार का वातावरण, परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालय के वातावरण निर्भर हैं। षिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व विकास एवं संवेगों को प्रभावित कर सकते हैं। अतः उचित व्यक्तित्व विकास हेतु सबसे पहले स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है। इसके अलावा समुचित व्यक्तित्व विकास के लिए छात्रों की अन्य मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की तुष्टि होना चाहिए।

वर्तमान में किशोर–किशोरियों में बढ़ी हुयी उच्श्रृंखलता, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, स्वेच्छाचारिता एवं बुराईयों के उत्पन्न होने के कारण अभिभावकों का गैर जिम्मेदार व्यवहार है। उन पर सम्पूर्ण ध्यान नहीं देने से वे सांवेगिक रूप से परिपक्व नहीं हो पा रहे हैं। व्यक्तित्व विकास हेतु छात्रों का समाजीकरण जरूरी है। समाजीकरण के द्वारा ही वह अपने संवेगों में परिपक्वता ला सकता है। अतः उसे उचित सामाजिक सम्पर्क सीमित करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि व्यक्तित्व सम्बन्धी निर्णय छात्रों के व्यवहारों के आधार पर होते हैं।

सामाजिक बुद्धि, योग्यता, भावों को समझने–समझाने की योग्यता एवं अपने संवेगों को नियन्त्रित करने की योग्यता ये सभी पक्ष देष, समाज के लिए सुशिक्षित नागरिक तैयार करने में मददगार साबित होते हैं। व्यक्तित्व के इन पक्षों का विकास करना शिक्षक एवं परिवार की जिम्मेदारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अस्थाना विपिन मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा,

कपिल एच0 के0 अपसामान्य मनोविज्ञान, एच0 पी0 भार्गव बुक हाऊस, आगरा,

कौल लोकेष शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली , विकास पब्लिषिंग बुक हाउस, प्रा0 लि0

कुलश्रेष्ठ, एस0 पी0 शैक्षिक मनोविज्ञान, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ

गिलफोर्ड डी मारगन रिचर्ड . ए0 किंग इन्ट्रोडक्षन टू साइकोलोजी, टाटा मेग्रेहिल पब्लिषिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली

गुप्ता अलका उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद